धर्म जीवन

मई 2006

- अधिकारी मनुष्यों के परम रक्षक और विकास भगवान देवात्मा
- नारकीय घर कैसे स्वर्ग बन गया
- नशे का जाल
- जीवन प्रसंग

जवानी में पहुंच कर मेरी प्रकृति जो कुछ बन गई –

वह मुझ पर हर समय यह प्रकट करती थी कि नौकरी करना, रुपया इकट्ठा करना, मान और यश लाभ करना इत्यादि तुम्हारे जीवन का लक्ष्य नहीं है और इसलिए मैं उन्हें अपना लक्ष्य नहीं समझता था, किन्तु धर्म अथवा उच्च जीवन को ही अपना मुख्य लक्ष्य अनुभव करता था और उसी को सन्मुख रख कर उसकी सिद्धि के लिए और सब कुछ विसर्जन करने के लिए प्रस्तुत रहता था। इस सब का फल यह हुआ कि जब मैं 32 वर्ष की आयु में पहुंचा तो मुझे यह अनुभव होने लगा कि मेरा जीवन जो कुछ अब तक बन चुका है, वह पूर्ण रूप से औरों के काम आने के लिए है। मेरे भीतर से यह आकांक्षा बार – बार और प्रबल रूप से उठने लगी कि मैं किसी प्रकार औरों के उच्च से उच्च हित साधन के काम आ सकूं और मेरे जीवन से औरों का जीवन बच सके। यह वह समय था, जबकि मेरे भीतर कोई वासना और कोई उत्तेजना ऐसी न थी कि जिसका मुझ पर अधिकार हो और जो मुझे नीचे ले जा सके, अथवा इसके भिन्न और कोई भाव या ख्याल न था कि जो मेरे रास्ते में रोक बन सके। हां ऐसी सब वासनाएं और उत्तेजनाएं आदि एक पालतू और दास कुत्ते की न्याई मेरे पावों के नीचे खेलती थीं। उनमें कोई मेरी स्वामी न थी, किन्तु मैं उन सब का स्वामी था। – – ”

देवात्मा

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :–

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 2716914

धर्म जीवन

खण्ड 18 अंक 5
मई 2006
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

अधिकारी मनुष्यों के परम रक्षक और विकासक भगवान् देवात्मा

जैसे नेचर का यह एक अटल सत्य है कि बिना आंखों के कोई जन देख नहीं सकता, बिना कानों की श्रवण शक्ति के किसी दूसरे की बात को सुन नहीं सकता: वैसे ही कोई भी जन अपने आत्मा के रूप और उस के जीवन के सम्बन्ध में अज्ञानी वा अबोधी रहकर अथवा आत्म तिमिर नाशक और आत्म रूप प्रकाशक देव ज्योति और आत्मिक रक्षक और विकासक देव तेज की अमूल्य किरणों से वंचित रह कर अपने जीवन की रक्षा और उन्नति नहीं कर सकता। मनुष्य यद्यपि अपने जीवन की यात्रा में अपने शारीरिक और मानसिक बोधों के विचार से ऐसी जाग्रति की अवस्था में प्रवेश कर चुका है कि इस अन्तर को वह बहुत स्पष्छ रूप से देखता और बोध करता है शारीरिक अंगों और मानसिक शक्तियों का सम्यक् रूप में उन्नत अवस्था में होना उसके लिए कितना मुबारिक और हितकर है, और उनका अधूरी वा रोगी अथवा विकृत अवस्था में होना किस कदर हानि-कारक और दुर्भाग्य का विषय है, इस अन्तर को वह बहुत स्पष्ट रूप से देखता और बोध करता है और इसीलिए अपने और अपने सम्बन्धियों के लिए शारीरिक अंगों और मानसिक बोधों को उन्नत और बलवान हालत में देखना चाहता है, और उस के लिए नाना प्रकार के यत्न करता देखा जाता है। मनुष्य जगत् की एक उन्नत शील श्रेणी विज्ञानी और परोपकारी भी बन चुकी है, उसे उसी राज्य में रहकर वा सेवाकारी बनकर तृप्ति मिलती है और उस से दूसरों के लिए भी बहुत कुछ भलाई आती है। तथापि मनुष्य अभी तक अपने आत्मा के सम्बन्ध में न केवल घोर आत्म अन्धकार वा बेसुधी की हालत में पड़ा हुआ है किन्तु नाना प्रकार के नीच सुखों का दास होकर अपहरणकारी बना हुआ है। यही कारण है कि वह दिन रात अपने सत्य और सार आत्मा के लिए हानिकारक गतियां करके और उसके हित की ओर से पूर्णता उदासीन रहकर दिनों दिन अन्धा, मैला, विकार युक्त और कठोर होता जाकर पतन को प्राप्त हो रहा है। उसे बहुत से सामान और सम्बन्धी भी प्राप्त हैं, अथवा उस ने एक वा दूसरे सुख की प्राप्ति को मुख्य रखकर नाना प्रकार के सामान और सम्बन्धी भी पैदा कर लिए हैं, परन्तु उन में से कोई भी उसके सार अस्तित्व आत्मा का ज्ञान और बोध

उसे नहीं देता और नहीं दे सकता। उलटा उसकी आत्म अन्धता और अबोधता को बढ़ाकर उसे और भी पतित करने और उसे मृत्यु का राही बनाने वाला प्रमाणित होता है। ऐसे ही अन्धे, कठोर अपहरणकारी, अत्यन्त असहाय और महा अबोधी परन्तु अधिकारी मनुष्यों को बचाने और उन का सर्वांग अंगों में कल्याण साधन करने के लिए भगवान् देवात्मा का आविर्भाव हुआ है और उन्होंने अपने देव बोधों और देव अनुरागों से परिचालित होकर उक्त उद्देश्य के लिए अद्वितीय जीवन व्रत ग्रहण करके अपना सर्वस्व भेंट चढ़ाया है, और हर प्रकार की अन्धता और अबोध ता को नष्ट करने और सत्य और शुभ का राज्य लाने अथवा अधिकारी मनुष्यों की आत्मिक रक्षा और विकास करने का अनोखा कार्य करना प्रारम्भ किया है और अपनी व्याकुलता परिपूर्ण कामनाओं, उपदेशों और लेखों के द्वारा शत-शत नर नारियों तक अपने जीवन दायक और उच्च परिवर्तनकारी देव प्रभाव पहुंचाकर उन में नई दृष्टि शक्ति और श्रेष्ठ अनुभव अथवा कितनों में अपने आत्मा के हित और अहित का सत्य ज्ञान वा बोध पैदा कर रहे हैं और उनका एक नए जगत् में प्रवेश करके उन्हें अपने परम रक्षक और विकासक मूल सम्बन्धी की कीमत और जरूरत को बोध करने के योग्य बना रहे हैं। आत्माओं के परम रक्षक और विकासक भगवान् देवात्मा के ऐसे जीवन दायक संग्राम की एक एक समय की देव वाणी निश्चय अत्यन्त हृदयस्पर्शीय है, हम उन की ऐसी ही एक समय की देव वाणी पाठकों के लाभ के लिए नीचे दर्ज करते हैं:-

भगवान् देवात्मा की देव वाणी:-

"याद रक्खो, कि तुम्हारा यह शरीर जिसे तुम सम्भाल-सम्भाल कर रखते हो, एक दिन राख की ढेरी हो जाएगा। तुम जितना इसे परोपकार के किसी काम में लगा लोगे, उतना ही उस के द्वारा तुम अपने आत्मा का भला कर लोगे, और उतना ही तुम्हारा यह शरीर सच्चे अर्थों में तुम्हारे लिए सफल होगा। तुम इसे नीच अनुरागों की तृप्ति में लगाकर नष्ट मत करो, किन्तु जब तक तुम्हारे लिए अवसर है, उसे भलाई के कामों में लगा कर भंली भांति सफल करो।

तुम अपने धन को अपनी सन्तान के चरणों में भेंट कर जाने के लिये एकत्र मत करो, किन्तु उसे भी देव समाज के उच्चतर भलाई के कामों में खर्च करो। बेशक हमारे देश में यह प्रथा अवश्य पाई जाती है, कि लोग अपनी सारी उमर की कमाई अपनी सन्तान को दे जाते हैं, और इस में तृप्ति बोध करते हैं, परन्तु सत्य धर्म्म इसकी आज्ञा नहीं देता। सत्य धर्म्म की शिक्षा के अनुसार जब तक तुम्हारी कोई सन्तान अपना गुजारा आप करने के योग्य न हो, तब तक बेशक उस की पालना करना तुम्हारा कर्तव्य है, परन्तु जब वह खुद कमाकर अपना गुज़ारा आप करने के योग्य हो जाए, तब उसके अनन्तर उसके सम्बन्ध में तुम्हारी ऐसी कोई जिम्मेवारी नहीं रहती और सत्य धर्म का मतलब यह है, कि फिर तुम अपने धन और अपनी सम्पति को परोपकार के कामों में लगा दो। उसके बाद भी यदि तुम अपनी सन्तान की पूजा में ही लगे रहो, तो यह तुम्हारा मोह बन्धन है अर्थात तुम उसका हित नहीं चाहते, किन्तु उस की गुलामी के कारण ऐसा करते हो। सन्तान की गुलामी, बीवी की गुलामी, धन की गुलामी और अन्य नीच सुखों की गुलामी आत्मा के जीवन का नाश करती है।

और सत्य धर्म की शिक्षा के अनुसार जिसे अपने आत्मा का बोध हो गया हो, उसके लिए ऐसी गुलामियों से आज़ादी या मुक्ति लाभ करने की ज़रूरत है।"

जिन-जिन सौभाग्यवान जनों को परम हितकर्ता भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों को नियमित रूप से लगातार लाभ करने का अवसर मिला है, वह क्या अपने आत्मिक कल्याण और कर्ता के सम्बन्ध में ज्ञानी वा बोधी बन गए व बनते जा रहे हैं। वह एक मात्र अपने परम गुरु भगवान् देवात्मा को ही अपने जीवन की रक्षा और उन्नति की पूर्ण सामग्री का भंडार अथवा अपना परम रक्षक और विकासक मूल सम्बन्धी बोध करते हैं। ऐसे सौभाग्यवान जन एक एक समय अपने आत्मिक कल्याण के निमित्त अपने परम उपास्य का देव प्रसाद (देव ज्योति और देव तेज) पाने के लिए उनके दरबार में प्रार्थी होते हैं:- एक माननीय कर्मचारी अपनी ऐसी ही आकांक्षा का निम्नलिखित पंक्तियों में प्रकाश करते हैं:-

"पूजनीय भगवन्! मेरी नीच "मैं", गन्दी, "मैं", हानिकारक "मैं" आप के सम्बन्ध में विघ्नकारी "मैं", आत्म अन्धकार और गुमराही की ओर ले जाने वाली "मैं", दूर हो, नष्ट हो। मैं आप के कार्य में अधिक से अधिक सेवाकारी अंग बन सकूं। मेरे जीवन के सब से बड़े परिचालक, सब से बड़े नेता, सब से बड़े केन्द्र और सब से बड़े आश्रय स्थान आप हो। मेरे जीवन की सारी शक्तियों की मालिक मेरी कोई नीच इच्छा, या मेरी नीच "मैं" न हो, किन्तु आप का देवरूप हो। मैं आप का सच्चा शिष्य बन कर और आप की मंगल इच्छा के अनुसार चलकर आपका सर्व श्रेष्ठ कार्य अधिक से अधिक मात्रा में करने के योग्य हो सकूं। इस मार्ग में मेरे भीतर या बाहर जो कुछ विघ्नकारी है, वह सब दूर हो, आप की और अन्य सहायकारियों की ऐसी सहायता मुझे प्राप्त हो।"

काश! हम लोग भी अपने परम रक्षक और विकासक मूल सम्बन्धी भगवान् देवात्मा के ऐसे ही रूप में दर्शन कर सकें। और उन से उनका देव प्रसाद अधिक मात्रा में पाकर न केवल अपनी आत्मिक रक्षा और उन्नति कर सकें, किन्तु दूसरों के भी आत्मिक कल्याण में सेवाकारी बनकर अपने अपने जीवन और सेवकी के श्रेष्ठ अधिकार को सफल कर सकें।

जैसे मैले और चीकट वस्त्र को धोकर उजला करने के बिना उस पर कोई रंग नहीं चढ़ता, वैसे ही तुम अपने विकार-युक्त और मैले हृदय को धोने के बिना उस पर जीवन-दायिनि धर्म प्रीति का कोई रंग नहीं चढ़ा सकते।

देवात्मा

नारकीय घर कैसे स्वर्ग बन गया

देव धर्म की सभा में आने से पहले हमारा घर नर्क बना हुआ था। दादी माता - पिता, भाई बहन हम सब अपनी - अपनी इच्छाओं के कारण लड़ते झगड़ते रहते थे। हम सब अपने आपको बहुत अच्छा समझते थे। हम कहते थे कि माता - पिता ने शादी करवाई अपनी काम वासना की पूर्ति के लिए और बच्चे पैदा किए। उनको पालना इनका फर्ज़ था। मजे लिए हैं तो अब भुगतो। मां बाप की जितनी बेइज्ज़ती की है, उसकी कोई सीमा नहीं। मां को अपने हाथों से मैंने पीटा है। पिता के सामने बकवास की है और उनको बदनाम करने की कोशिश की है। इधर की चुगली उधर बस यही एक काम किया है। 95 वर्ष की बूढ़ी दादी से खूब काम करवाया है। बुरा भला कहा कभी कभार चोटी से भी पकड़ कर खूब दुख पहुंचाया है। हम सब ही आपस में लड़ते रहते थे। शायद ही कोई दिन होगा जो शान्ति से गुजरता हो। हमारे घर की दीवार तक आने से भी पड़ोसी डरते थे। हम समाज की परवाह नहीं करते थे, बड़ी बेशर्मी से लड़ते थे। पूरे मोहल्ले को पता था कि हमारा व्यवहार एक दूसरे को हानि पहुंचाने का ही है। मकान बनाते समय पिता जी ने पहले ही बीच में दीवार डाल दी थी, ताकि दोनों भाईयों की शादियां हों तो दोनों भाई अलग अलग रहें। कभी कभी तो यहां तक सोचते थे कि आत्म हत्या कर लें या घर से भाग जाएं। कभी कोई दरवाजे से सिर फोड़ता, कोई बर्तन तोड़ता, कोई दूसरों की स्वास्थ्य को हानि पहुंचाता। हम में से जो लड़ाई झगड़ा करके बाहर निकलते, तो पड़ोसी भी घरों में घुस जाते कि हम गुस्सा न करें। मुझ में अपना अहंकार था, बाकी लोगों में अपने अपने अहंकार थे। घर में जब देखो, क्रान्ति, विद्रोह, लड़ाई झगड़ा, बहुत कम शान्ति रहती थी। छोटी - छोटी बात को लेकर झगड़ा शुरु हो जाता।

अगर देव धर्म न मिलता, तो न जाने कौन से नर्क में पड़े रहते। क्या पता क्या बुरा हाल होता। हम सोचते हैं कि देव प्रभावों से अब यह घर स्वर्ग बन रहा है। यह वही घर है, जहां दिन रात जीना हराम था। क्या यह वही घर है जहां एक दूसरे का अपमान होता था, बड़ों की कोई कदर नहीं थी। क्या यह वही घर है जहां एक दूसरे का अशुभ सोचा जाता था। किसी रिश्तेदारी का लिहाज न था, गुरु ने नर्क से स्वर्ग बना दिया, हमारी जिन्दगियों में खुशियां भर दीं, जो मौत की ओर जा रहे थे, उनमें नया जीवन संचार कर दिया, हमारा भविष्य संवार दिया। वाह! देवगुरु जी कैसा स्वर्ग लाते हैं, नर्क मिटाते हैं। हमारे जीवनों में नया उत्साह भर दिया। जीवन में सुख शान्ति लाकर, हमारे व्यवहार बदल दिए। श्रीमान जी, यदि आपकी सभाएं न मिलतीं तो हम शायद ही लम्बे समय तक रह पाते। इस घर में तो आत्म हत्या के विचार चलते थे। मिथ्या धर्म कर्म, मन्त्र जाप, पूजा पाठ खूब चलते थे, परन्तु फिर भी शान्ति नहीं थी, घर नर्क बना हुआ था, परन्तु इस नर्क को गुरु के प्रभावों ने स्वर्ग में बदल दिया। श्रीमान जी! मेहरबानी करके यह प्रभाव हम तक पहुंचाते रहना, ताकि फिर हम नर्क में न पड़ जाएं। हमारी उंगली अपने हाथ में पकड़े रखना।

हम चाहते थे कि आपको अपने घर पर

बुलाएं और आपसे उच्च प्रभाव ग्रहण करें। कभी हमारे घर में कोई महा पुरूष, साधु सन्त नहीं आया। आपके आने से हमारे घर का वातावरण ही बदल जाएगा। कभी कभी डरता हूँ कि मैं कहीं ऐसे प्रभावों से वंचित न हो जाऊं, क्योंकि मैं बहुत चंचल हूँ, न जाने कब नीच प्रभावों में चला जाऊं। क्योंकि मेरी नजरें, मेरे हावभाव मेरा चाल चलन, मेरी सोच अभी भी गन्दी है। मैं खुद तो नीच हूँ। परन्तु दूसरों को भी नीच बना देता हूँ। मेरे भीतर का अहंकार नहीं मर रहा। कोई ज़रा सी बात मेरी शान के खिलाफ बोल दे तो लगता है कि कोई छुरा मार गया। मान सम्मान वा प्रशंसा का भूखा हूँ। अभी भी किसी की बात नहीं मानता, अपनी ही चलाता हूँ मुझे बचाओ, मेरा नीच जीवन बदलें, मुझमें उच्च प्रभाव आएं मेरा घर स्वर्ग बना है, आप हमारी मदद करें। मेरी बहन का जीवन भी उच्च बनाओ। वह आपसे खुलकर बात नहीं कर पाती कि कहीं आप किसी बात का बुरा न मान जाएं। मैं भी डरता हूँ, मुझमें अभी बचपना है। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा कि मेरा लक्ष्य क्या है। अभी अपने आपको आपके हवाले करना चाहता हूँ। मेरे भीतर ईर्ष्या द्वेष भरा पड़ा है, हमेशा दूसरों की कमियों को देखता हूँ। दूसरों से जलता हूँ, चाहता हूँ, कि दूसरे मुझे अच्छा व्यवहार दें, मुझे अच्छा समझें, मगर खुद गुस्से से भरा रहता हूँ। दूसरों की सेवा करना लाभ की चीज़ नहीं लगती। मुझे मेरी कमियां दिखाओ। नीच असरों में रहकर कहीं देव रत्न न बन जाऊँ।

देवात्मा ने इस नारकीय घर को स्वर्ग बनाया है, जितना भी धन्यवाद दूँ थोड़ा है। सुभाष सेतिया जी का धन्यवादी हूँ, जो मुझे इस संगत में लाए। 2 वर्ष पहले मिथ्या में था इसलिए दोबारा नहीं आया। मगर सुभाष जी ज़ोर लगाते रहे पुस्तकें पढ़ने को देते रहे, आखिर आप से मिला ही दिया। देव संगत ने मेरा जीवन ही बदल दिया। हमारे पर अपना हाथ रखो। मैं बहुत ही गन्दा वजूद हूँ। मुझे ऐसे प्रभावों की आवश्यकता है। मेरी बहन पर भी यह कृपा हो। मैं आपका बहुत धन्यवादी हूँ।

(एक सत्संगी)

पिशाचत्व के समुद्र में डूबते हुए आत्माओं के लिए मैं जीवन की आशा का एक जहाज हूँ और पिशाचत्व के असरों से घिरी हुई जमायतों और कौमों के बचाने, उभारने और आला बनाने के लिए मैं मिसल एक खमीर के हूँ।

– देवात्मा

जीवन प्रसंग

बिल गेट्स का एक कथन है : अगर आप ग़रीब पैदा हुए हैं, तो इसमें आपका कोई दोष नहीं। लेकिन अगर कोई ग़रीब रूप में मरते हैं, तो इसमें पूरी तरह आपका दोष है।

कितनी सटीक बात है। आप किसके घर में पैदा होते हैं, यह आपके बस में तो है नहीं। आप कुछ नहीं कर सकते। मान लीजिए कि आप ग़रीब के घर में पैदा हुए, पर अगर आप मरते समय भी ग़रीब बने रहते हैं, तो इसका मतलब यह हुआ कि आपको जो पचास-साठ साल की जिंदगी मिली, उसका आप कुछ नहीं कर पाए। आपने अपनी जिंदगी को सिर्फ बर्बाद ही किया।

जिंदगी हर समय इंसान को मौके देती है। एक नहीं दस दस बार। कई बार वह इंसान उन मौकों को पहचान लेता है और आगे बढ़ जाता है तो कई बार नहीं पहचान पाता। ऐसा जीवन जीने वालों को अपने जीवन के बारे में बार बार सोचना चाहिए और उसे दुरुस्त करने की कोशिश करनी चाहिए। नया वित वर्ष शुरू होते ही मौका है अपने आप को तौलने का। आप कहां हैं और आने वाले एक साल में आप कहां पहुंच सकते हैं, इसको पूरी तरह जांच लो, अगर आपको आज तक ग़रीबी में जान गंवाने का अर्थ समझ में नहीं आया है, तो अब समझ लें। अपने आपको प्लान करें। ज़रूरी नहीं कि इस साल में आप सीधे बिल गेट्स जैसा बन जाएं, लेकिन हां, कोशिश ज़रूर कर सकते हैं। पहले अपनी क्षमताओं का आंकलन करें और पहचानने की कोशिश करें कि आखिर वे कौन सी चीज़ें हैं, जिन्होंने अब तक आपको प्रगति के पथ पर अग्रसर होने से रोका। खुद की ऐसी ख़ामियों को दूर करें। अपने लिए एक लक्ष्य बनाएं कि पिछले वित वर्ष के आखिरी दिन आप जितना कमा रहे थे, इस वित वर्ष के आख़िरी दिन, यानी अगले साल 31 मार्च को इस कमाई में कम से कम पंद्रह से बीस फ़ीसदी (या जितना भी आप अपनी क्षमता समझते हों) इज़ाफ़ा ज़रूर कर लेंगे। अगर उस समय आप नहीं कर पाए, तो उसके कारणों पर ज़रूर विचार करें। तो सोचने का समय नहीं है। जो दिन बीत गए सो बीत गए हैं। बाकी के दिनों को प्लान कीजिए और प्रगति की राह पर कदम बढाइए।

मां ने बेची इडली, बेटा बनाएगा फूड चेन

अहमदाबाद 3 अप्रैल : आप 54 साल की परित्यक्त पीई दीपरमानी से मिलें। ये पिछले 30 साल से चेन्नई की सड़कों पर घर की बनी इडली बेच कर रोजाना 30 रु० कमाती हैं। तमिलनाडू मिड डे मील योजना में वह आया का काम भी करती है। पैसा पैसा जोड़कर पाँच बच्चों को पढ़ाया। उन्होंने भी होश संभाला तो इडली बेचने में मां का हाथ बटाया। उद्यमिता का यह जज़बा ही था कि दीपरामानी का बड़ा बेटा. ई. शरतबाबू आईआईएम अहमदाबाद से 2006 में पीजी डिग्री लेने के बाद पूरे देश में फूड चेन खड़ी करने की तैयारी में है।

शनिवार की सुबह जैसी खुशी दीपरमानी ने कभी नहीं देखी जब इंफोसिस प्रमुख नारायणमूर्ति ने उसके 27 वर्षीय बेटे की कैटरिंग व्यवसाय की योजना को हरी झंडी दिखाई। गौरव दागोनकर की संगीत सी डी के साथ फूडकिंग कैटरिंग सर्विसंस प्रा. लि। इन दो

ग्रेजुएट ने नारायणमूर्ति और इंस्टीट्यूट के निर्देशक बकुल ढोलकिया की मोटी तनख्वाह वाली नौकरियों की पेशकश ठुकरा दी और गैर परांपरागत राह पकड़ी। गौरव दगांवकर अभिजीत सावंत के साथ संगीत के क्षेत्र में काम करेंगे तो शरत ने फूड चेन खड़ी कर 10 सालों में करीब 50,000 लोगों को रोजगार देने की ठानी है। अपनी सारी उपलब्धियों का श्रेय मां को देने वाले शरतबाबू उन ग्रेजुएट्स में से हैं, जिसने प्लेसमेंट के बजाय अपना व्यवसाय शुरू करना पसंद किया। शरत ने बताया कि वे जब इडली बेचते थे तो सोचा करते थे कि एक दिन उनकी कंपनी भी होगी। जो देश के कई कारपोरेट समूहों को पैकबंद खाना उपलब्ध कराएगी। यह सपना अब आखिरकार साकार होने को है।

उम्र 22, वेतन 20 लाख महीना

रोहतक, 30 मार्च : कहते हैं कि पूत के पांव पालने में नज़र आते हैं। यह कहावत चरितार्थ हुई रोहतक के उस होनहार छात्र विवेक के लिए जो प्रारंभ से ही हर कक्षा में अव्वल रहा। कैट में उसने 99.96 फीसदी अंक हासिल कर पूरे भारत में पहला स्थान प्राप्त कर रोहतक का नाम शिक्षा के क्षेत्र में चमका दिया। 28 मार्च को आईआईएम बंगलौर में उसने विख्यात उद्योगपतियों के बीच 'आयरन ब्यावज ऑफ द ईयर' का खिताब जीता।

विवेक लोहचब के पिता आज़ाद सिंह कोआपरेटिव बैंक में कैशियर हैं और मां रामरति देवी जेबीटी अध्यापिका हैं। विवेक ने आर्थिक संघर्षो का सामना करते हुए। पांचवी तक सरकारी स्कूल में अध्ययन करने के बाद इस 22 वर्षीय नौजवान ने कुजंपुरा सैनिक स्कूल से 12 वीं कक्षा मैरिट में पास की। इसके बाद उसने पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज चण्डीगढ़ में मैकेनिकल कोर्स में दाखिला लिया। इसी माह बंगलौर आईआईएम से पीजी डिप्लोमा इन मैनेजमेंट की डिग्री ग्रहण की। विवेक की सबसे बड़ी खासियत है कि कैट में एक लाख तीस हजार विद्यार्थियों में से देश के 50 टॉप विद्यार्थियों का चयन किया गया। इनमें से विवेक प्रथम रहा। विवेक के पिता ने बताया कि वह बचपन से ही किताबों में खोया रहता था। पांचवी कक्षा में भी उसे वजीफा मिला था लेकिन कुंजपुरा स्कूल में कोई दिक्कत आ सकती थी। इसलिए उस वजीफे को स्वीकार नहीं किया गया। सरकारी स्कूल से अपना सफर शुरू करने वाले विवेक से जब कहा जाता था कि वह आईएस या आईपीएस कर लें, तो उसका जवाब होता था कि डीसी या एसपी बनाकर उसे एक दायरे में मत बांधिए। उसका ख्वाब बहुत ऊंचा है।

मां कहती है कि हम उस समय यह समझ नहीं पाते थे कि विवेक आखिर चाहता क्या है? अब पता चला कैसे ख्वाब देखता था। विवेक को कई कंपनियों ने ऑफर दिए हैं लेकिन उसने जर्मनी की फूडेन बर्ग नामक कंपनी में ज्वाइन करने का फैसला लिया है। कंपनी उसे 20 लाख रुपए प्रतिमाह देगी। उसे एमडी बनाया गया है।

परिवार - पिता कोऑपरेटिव बैंक में कैशियर
मां - जेबीटी टीचर

पढ़ाई - पांचवीं कक्षा तक रोहतक के सरकारी स्कूल में, कुंजपुरा सैनिक स्कूल से 12 वीं की, मैकेनिकल इंजीनियरिंग डिग्री चण्डीगढ़ के पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज से, कैट में पाए थे 99.96 फीसदी नंबर

नशे का जाल

तेज रफ्तार जीवन शैली, एडवेंचर की चाह और दूसरों से अव्वल दिखने की कोशिश में युवाओं का एक बड़ा समूह जाने-अनजाने नशीली दवाओं का शिकार बनता जा रहा है। और यह एक बड़ी सामाजिक समस्या का रूप लेती जा रही है। राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने समस्या से निजात पाने के लिए अभिभावकों को सलाह दी है कि वे अपने बच्चों के व्यवहार पर नज़र रखें, ताकि उनमें आने वाले बदलाव को भांप सकें और अपने बच्चों को मादक पदार्थों की गिरफ्त में आने से बचा सकें। निश्चित रूप से बच्चों पर प्रभावी निगरानी अभिभावक ही रख सकते हैं, क्योंकि बच्चे ज्यादातर समय घरों में बिताते हैं, खासकर किशोर वय के बच्चे। पर समाज में बढ़ते नशीले पदार्थों के असर को कम करने के कई और उपाय करने होंगे।

परिवार के स्तर पर इसे नियंत्रित करने के अलावा स्कूलों के स्तर पर इसे रोकने का उपाय शिक्षकों और स्कूल प्रबंधन को करना चाहिए, क्योंकि किशोर वय के छात्रों को नशीले पदार्थों की लत अकसर स्कूलों की संगत में ही लगती है। स्कूलों के आसपास एक सौ मीटर तक सिगरेट आदि उत्पादों की ब्रिकी पर रोक लगाई गई है। इस तरह के और उपाय करने होंगे। शिक्षक भी अगर छात्रों के व्यवहार पर नज़र रखें तो वे उन्हें गलत रास्ते पर चलने से रोक सकते हैं। तीसरा स्तर सरकार की ओर से किए जाने वाले उपायों का है। नशीली दवाओं का कारोबार ऐन प्रशासन की नाक के नीचे होता है। ज्यादातर नशीली दवाएं तस्करी के जरिये देश में लाई जा रही हैं और व्यापक नेटवर्क के जरिये उसे देश भर में फैलाया जा रहा है। इस कारोबार में अंडरवर्ल्ड के लोगों के साथ-साथ सीमा पार सक्रिय आतंकवादी संगठन तक शामिल हैं। यह नेटवर्क तोड़ना होगा।

नशीली दवाओं के शिकार लोगों की बढ़ती संख्या का एक कारण इनकी आसान उपलब्धता है, जिसे पुलिस और प्रशासन की सख्ती से ही रोका जा सकता है। मादक पदार्थों का बढ़ता इस्तेमाल आपराधिक घटनाओं में बढ़ोतरी का भी एक कारण है। इसलिए इसका विस्तार रोकने के लिए परिवार और स्कूल के साथ-साथ सरकारी मशीनरी की एक त्रि-स्तरीय व्यवस्था बनानी होगी। इस पर रोक लगाने के साथ-साथ जिन माध्यमों का असर किशोरों और युवाओं पर हो रहा है और जिनके कारण वे इसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं उसे भी नियंत्रित करना होगा। फिल्म और हाई सोसायटी के लोगों को भी इस बीमारी से लड़ने के लिए आगे आना होगा। नशा मुक्ति केन्द्रों की संख्या भी बढ़ानी चाहिए ताकि पीड़ितों को जल्द से जल्द इससे छुटकारा मिल सके। इससे पहले कि युवा पीढ़ी आधुनिकता की होड़ में बरबाद हो, बचाव के प्रभावी उपाय करने होंगे।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

तुम जो आगे बढ़ गए, मुड़ देखना पीछे ज़रा
धर्म सम्बंधी कोई, तुमको पुकारे साथियो
बेनती मेरी है तुमसे और गुरु भगवान से
हो सुफल जीवन मेरा, तुमरे सहारे साथियों।

जाते हो कहाँ

उधार उठा कर
रिश्वतें लेकर
धोखाधड़ी करके
धन एकत्र कर लिया
रहने को बना घर लिया
बधाईयां ! बधाईयां !
रहने को घर चाहिए ही
पर मृत्यु के बाद कहाँ जाओगे
कहाँ रहोगे
कभी सोचा है?
कल किसने देखा है
यही लोक सब कुछ है
परलोक किसने देखा है?
सुनो मैं बताता हूँ
सुनो मगर ध्यान से
यहाँ का घर यहीं धरा रह जायेगा
साथ तेरे न जायेगा।
बच्चे बूढ़े होंगे
इस घर के स्वामी होंगे
अलग होकर लड़े झगड़ेंगे
सिर फोड़ेंगे एक दूजे का
बूढ़े-बुढ़िया के लिए
एक कमरा भी नहीं होगा
स्टोर या बरामदे में
पड़े होंगे कूड़े कबाड़ के साथ।
धन पाप का लगाया था मकान पर
बहुत याद आयेगा
बहुत मन को तड़पायेगा
हाय? यह मैंने क्या किया
गऊएं हलाल कीं, सुअर काटे
इन्सानों के गले दबाये
और यह घर बनाया
मैंने यह पाप क्यों करना था
मुझे तो मरना था ।
मरणोपरांत क्या होगा?
भूतप्रेत बनोगे, चुडैल चाण्डाल बनोगे
इन्हीं मकानों में भटकेगी
तुम्हारी आत्मा
अधम आत्मा बनकर।

विपन कुमार
जवाहर नवोदय विद्यालय - महियावाला
जिला - फिरोजपुर पंजाब

फरिशता तहसीलदार सरदार सावन सिंह गिल की 64 वीं बरसी

यह बरसी इस वर्ष स. परमजीत सिंह गिल XEN उनके पड़पौते के घर लुधियाना में 16 अप्रैल को पहले की तरह मनाई गई। इस वर्ष भी श्रीमान बलदेव सिंह जी मन्त्री देव धर्म मिशन इस सभा के आयोजन के लिए लुधियाना पहुंचे। सरदार साहब के परिवार के प्राय: 40 जन चण्डीगढ़, बाघापुराना, और स्थानिय लुधियाना निवासी श्रद्धा के भावों से यहां पहुंचे।

सभा का आरम्भ 11.30 बजे भगवान देवात्मा तथा सरदार साहब की फोटो पर हारों के अर्चन के बाद शुरू हुआ।

सब से पहले पिछले साल दो नजदीकी रिश्तेदारों की मौत के कारण दो मिन्ट का मौन रखा गया। फिर माता पिता के सम्बन्ध में मिसिज सुनील भुटानी तथा श्री रठौर साहब के मधुर स्वरों में गाये दो गीतों की कैसिट लगाई गई। प्राय: दस मिन्ट तक इन गीतों ने अति भावपूर्ण वातावरण पैदा कर दिया और सब उपस्थित जन भाव विभोर हो उठे।

एक पारिवारिक जन की पूछताछ के कारण भगवान देवात्मा कौन थे? श्रीमान जी ने संक्षेप से उनके जन्म, जन्म स्थान, विद्या नौकरी देव समाज की स्थापना पर रोशनी डाली।

इसके बाद श्रीमान जी ने गिल परिवार को उनकी इस विशेषता पर बधाई दी जो पिछले 64 सालों से सरदार साहब तथा अपने माता पिता के उपकारों को याद करते आ रहे हैं। आधुनिक युग में मां बाप के नुक्स, जायदाद के झगड़े का जिकर तो बहुत होता रहता है। प्रतिदिन समाचार पत्रों में उपकारी माता - पिता के तिरस्कार, वृद्ध आश्रम में छोड़ने के उदाहरण मिलते हैं।

सरदार जी का विशेष परिवार यह कृतज्ञता का नमूना पेश करता है।

श्रीमान जी ने उनकी सादगी, बेमिसाल ईमानदारी परिश्रम, लगन, दूसरों की सेवा आदि पर विशेष ध्यान दिलवाया। ऐसे पर उस समय के अंग्रेज़ गवर्नर उन्हें फरिशता कहने पर मजबूर हो गये। और उन्होंने उन्हें सरदार साहब की उपाधी, जागीर, कीमती मुरब्बे इनाम में देकर मामूली किसान से असल में सरदार बना दिया। श्रीमान जी ने बड़े भावुक होकर परिवार को प्रेरणा दी कि वह अपने फरिश्ते दादा, पड़दादा के पद चिन्हों पर चलने का यत्न करें।

फिर चन्द पारिवारिक जनों ने अपने माता पिता के उपकारों का वर्णन करके इस दिन की सराहना की। Deepi Brar जो Navy के महिकमें के Highest rank के अफसर हैं। बताया कि पिछले दो सालों से इस सभा में शामिल होकर खुशी अनुभव करते हैं। इस के बाद प्रीती ने अपने भाई दीप जो अब कनेडा में है का Mail पर आया नोट पढ़ कर सुनाया उन्होंने विशेष कर अपनी माता के परिश्रम और संयम का वर्णन किया। बाप की नौकरी छुट जाने के कारण 8 बच्चों का पालन करके उन्हें इस योग्य बनाया कि उनमें से कितने ब्रिगेडियर वीर चक्र, वायु सेना मैडल पाने वाले बेटे पैदा किये और उसका कष्टों में पला हुआ परिवार आज अति समृद्ध और खुशहाल परिवार बन गया। यह सब मां बाप से पाई पूंजी की बदौलत है। अच्छा आचरण, ईमानदारी तथा समाज सेवा के उच्चतम स्तर के व्यक्ति थे। BPS Gill जो वीर गुरभगत के बेटे

हैं ने ब्यान किया कि दादा जी Was a person with superme standard of Character, honesty and social service, उनके गुणों को लोग अभी तक नहीं भूले। वह अभी 14 अप्रैल को पाकिस्तान होकर आये। वहां वह वीर गुरभगत सिंह के सहपाठी प्रौफेसर कादर से मिले। जो अब 94 सालों के स्वस्थ मनुष्य हैं, उन्होंने दादा जी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा स. सावन सिंह एक देवता थे। उनके मुंह से दादा जी की प्रशंसा सुन कर मैं गर्व से भर गया कि वह उन्हें 70 साल के बाद भी याद करते हैं।

फिर उन्होंने अपनी माता की जो अभी कुछ महीने पहले परलोक सिधार गई, कुरबानियों का ज़िकर किया।

फिर उन्होंने दो हृदयविदारक घटनाओं का वर्णन किया जिन्होंने अपनी बेटियों के लिये त्याग किया। एक ने प्राय: 1000 कि.मी साईकिल चला कर अपनी बेटी को सान्त्वना दी। दूसरी ने बेटी की जुदाई न सहन कर जेल में रहना स्वीकार किया। अन्त में उन्होंने कहा हम अपनी मां को याद कर उनको श्रद्धांजलि पेश करें। अन्त में उनकी बेटी हितलता दयोल ने भरे दिल से कहा कि उनके माता पिता के उपकार अनगिनत हैं। उनका रोम रोम उपकृत है। उनकी हस्ती, उनकी प्राप्तियां, उनकी शोभा, उनका सम्मान, क्या घर में क्या स्कूलों में, जहां काम किया सब उनकी बदौलत है। वह प्रतिदिन नियत समय प्रात: उनकी फोटो को प्रणाम करके उनके उपकारों का चिन्तन करके एक विशेष सकून अनुभव करती हैं और विश्वास करती हैं कि उनकी रुह अभी भी परलोक से उनकी रक्षा करती है।

अन्त में श्रीमान जी तथा आये हुए सम्बन्धियों का धन्यवाद करके उन्होंने देव समाज, जिसने उन्हें फरिश्ता बनाया, के लिए दान की अपील की, सबने खुशी-खुशी अपना हिस्सा डाला और 4200 रुपये दान हुआ। बेटी ने आठ हजार रुपये देकर पिता जी का जीवन चरित्र दोबारा छपवाने की प्रार्थना की।

परमजीत गिल तथा उनके परिवार ने बड़े प्रेम से सब को स्वादिष्ट भोजन खिलाया, चाय काफी पिलाई और इस बरसी की प्रथा को जारी रखने की इच्छा प्रगट की।

क्या यह सच नहीं कि तुम्हारे जीवनों में मेरी देव ज्योति और देव तेज के द्वारा जो शुभ परिवर्तन हुआ है, वह मेरे साथ जुड़ने से पहले तुम्हारें भीतर कोई परिवर्तन उत्पन्न नहीं कर सका? तुम्हारे मां बाप आदि सम्बन्धी नहीं कर सकें। बिरादरी और सम्प्रदाय के लोग नहीं कर सके। कोई धर्म ग्रन्थ नहीं कर सका, कोई बड़े से बड़ा कल्पित उपास्य देवता भी नहीं कर सका, हां और कोई भी नहीं कर सका।

- देवात्मा

* पाठकों के विचार *

आस्ट्रेलिया से वसन्त लाल जी अरोड़ा लिखते हैं:-

आप 'धर्म जीवन' और 'हित स्त्रोत' समय पर भेज रहे हैं, उसके लिए आपका बहुत आभारी हूँ। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के शुभ जन्म-महोत्सव की रिपोर्ट बहुत अच्छी थी, विशेषकर भाव प्रकाश की सभा की रिपोर्ट पढ़कर आप द्वारा किए जा रहे कारज की महिमा मुझे बहुत ही उपलब्ध हुई। मुझे..... जी ने पहले ही बताया था कि इधर के महोत्सव के भाव प्रकाश दिल को छूने वाले थे, इससे सिद्ध होता है आप द्वारा देव प्रभावों का कितना कारज हो रहा है, उसके लिए मेरी तरफ से बहुत बहुत बधाई। जो जन जितना जितना आपको सहयोग दे रहे हैं वह सब भी बधाई के पात्र हैं। काश! किसी तरह सब इकट्ठे होकर काम कर सकते। दुःख होता है कि किसी भी कारण से लोग चुप होकर घर बैठे गए हैं, फिर कैसे एक होंगे? श्रीमान बलबहादुर सिंह जी देव धर्म मिश्न के लिए जितनी शक्तियां लगा रहे हैं, वह भी बधाई के पात्र हैं।

रुड़की में आप द्वारा कराई गई सभाओं का हाल पढ़कर बहुत खुशी हुई। टैगोर थियेटर में माता पिता दिवस की Coverage भी बहुत अच्छी थी यदि सम्भव हो तो इसकी एक Cassette तथा महोत्सव पर श्रीमान विनोद जी के पब्लिक लैक्चर की तथा भाव प्रकाश समेत एक या दो Cassettes भी बनवा दें। Mr. Kataria जी आपसे ले जाएंगे।

मुझे यहां भी मौका मिलता है, परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शिक्षा का प्रचार करने का कुछ संग्राम करता हूँ, परन्तु विज्ञान मूलक शिक्षा से लोग प्रभावित होते हैं, परन्तु अपनाने को तैयार नहीं, पुस्तकें और सामाजिक पत्रिकाएं लोगों को पढ़ने को देता रहता हूँ।

आज मनुष्यमात्र की जो अवस्था है तथा समाज को स्थापित हुए 120 वर्ष लग गए, वर्तमान हालात को देखते हुए तो लगता है कि गुरु महाराज के कारज को देखने की आंख पैदा होने में 4-5 हजार वर्ष लग जाएंगे, इससे बड़ी निराशा होती है।

फिर अपने जीवन पर नज़र मारकर भी बहुत दुःख होता है कि जन्म से इस वातावरण में पल बढ़कर, शिक्षा प्राप्त करके भी मेरा जीवन गुरु महाराज की शिक्षा के अुनसार 10-15% से भी कम है। क्या हुआ यदि पाप और मिथ्याएं छूट गई, परन्तु अब तक एक भी उच्च भाव पैदा नहीं हुआ। सूक्ष्म रूप से नीच गतियां होती रहती हैं, उसके मुकाबले में उच्च गतियों की गिनती बहुत ही कम है।

यहां पर धर्म संगत के स्थान पर और ही तरह की संगत है, थोड़ा बहुत साधन कर लेता हूँ। किताबों का पाठ कर लेता हूँ, पत्रिकाएं पढ़ लेता हूँ। कभी कभी बहुत निराश हो जाता हूँ।

मुझे गुरु महाराज की संगत माता जी के कारण मिल तो गई परन्तु उसकी महानता देखने और उस राह पर स्थाई रूप से चलने की सामर्थ्य तथा इच्छा पैदा न हो सकी।

धन्य हैं आप गुरु महाराज के कारज की महिमा महान करने में अपना तन, मन, धन सब कुछ अर्पण कर सत्य धर्म को जीवन में उतार कर उसकी सच्ची महिमा का प्रचार दिन रात कर रहे हैं, इस प्रकार अपने श्रद्धेय उपकारी माता पिता के नाम को महान कर गुरु चरणों में टूट फूट कर 50-60 वर्षो से लगे हुए हैं। आपके चरणों में श्रद्धा के सुमन अर्पण करता हूँ।

मुफीद जानकारी

मोटापा एवं मधुमेह नाशक दलिया: – गेहूं 500 ग्राम, बाजरा 500 ग्राम, चावल 500 ग्राम, साबूत मूंग 500 ग्राम। सभी को समान मात्रा में लेकर, सेंककर दलिया बना लें। इसमें अजवाइन 2 ग्राम तथा सफेद तिल 50 ग्राम भी मिला लें। आवश्यकतानुसार लगभग 50 ग्राम दलिया को 400 ग्राम पानी में डालकर पकाएं, स्वादानुसार सब्जियों का हल्का नमक मिला लें। नियमित रूप से 15 - 30 दिन तक दलिया का सेवन करने से मधुमेह समाप्त हो जाता है। मोटापे से पीड़ित हृदय रोगी इस दलिया का नियमित सेवन कर निरपवादप रूप से अपना वज़न कम कर सकते हैं।

हृदयरोग, अम्लपित्त, उदर रोग एवं मोटापे में लाभप्रद लौकी का रस: – लौकी 500 ग्राम, पुदीना पत्र 7 नग, तुलसी पत्र 7 नग। उक्त सभी से 1 कप रस निकालकर प्रतिदिन प्रात:काल खाली पेट पीने से हृदय की धमनियों में हुए अवरोध भी खुल जाते हैं। अम्लपित्त एवं समस्त उदर रोगों का नाश करने के लिए लौकी रस का सेवन नियमित रूप से करना चाहिए।

पुरानी खांसी की अचूक दवा: – काली मिर्च दिनभर में 5 - 7 नग धीरे धीरे चूसने से खांसी में पहले ही दिन से तत्काल लाभ मिलता है। एक बार में 2 - 3 काली मिर्च मुंह में डालकर चूसें। वर्षो पुरानी खासी को हमने मिन्टों में इस प्रयोग से ठीक होते देखा है।

मधुमेह के लिए घरेलू उपचार: – 1. खीरा, करेला और टमाटर एक एक की संख्या में लेकर जूस निकालकर, सुबह खाली पेट पीने से मधुमेह नियंत्रित होता है। 2. जामुन की गुठली का पाउडर करके, एक एक चम्मच सुबह - शाम खाली पेट पानी से लेने से मधुमेह नियंत्रित होता है। 3. 7 पत्ते नीम के सुबह खाली पेट चबाकर अथवा पीसकर पानी के साथ लेने से मधुमेह में आराम मिलता है। 4. सदाबहार के 7 फूल खाली पेट जल के साथ चबाकर सेवन करने से भी मधुमेह में लाभ मिलता है। 5. गिलोय, जामुन, कुटकी, निम्ब पत्र, चिरायता, कालमेघ, सूखा करेला, काली जीरी, मेथी इनको समान मात्रा में लेकर चूर्ण कर लें। यह चूर्ण 1 - 1 चम्मच सुबह - शाम खाली पेट पानी के साथ सेवन करने से मधुमेह में विशेष लाभ मिलता है।

कफ रोगों का घरेलू उपचार: – बादाम गिरी 100 ग्राम, खांड 50 ग्राम, काली मिर्च 20 ग्राम। सबका पाउडर करके मिलाकर सुरक्षित कर लें।

सेवन विधि : एक चम्मच सायं खाने के बाद गुनगुने दूध से सेवन करने से जीर्ण कफ रोग, नजला - जुकाम, साइनस में विशेष लाभ होता है। यह प्रयोग कब्ज को भी दूर कर देता है।

विशेष : जिनको मधुमेह हो, वे व्यक्ति खांड का प्रयोग न करें तथा जिनको अम्लपित्त हो, वे काली मिर्च 10 ग्राम की मात्रा में ही प्रयोग करें।

बालों को झड़ने एवं सफेद होने से रोकने वाला फकीरी प्रयोग: – नियमित रूप से दोनों हाथों की उंगलियों के नाखूनों को आपस में दिन 2 - 3 बार 5 - 5 मिन्ट रगड़ें। इस प्रयोग के अभ्यास से बालों का झड़ना एवं सफेद होना रुक जाता है। बाल काले एवं घने होने लगते हैं। हमने इस प्रयोग से हजारों वंशानुगतरूप से भी गंजों के बाल उगते एवं सत्तर वर्ष के वृद्धों के भी बाल काले होते देखे हैं।

शुभ संग्राम

11 मार्च की सुबह 10.30 बजे के करीब श्रीमान बलदेव सिंह जी और सुखदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से संगरूर पहुंच कर थोड़ी देर श्रीमान सीता राम जी से मिले। फिर वहां से रवाना होकर शाम को डबवाली पहुंचे। वहाँ सुखदेव जी ने शाम की सभा की तैयारी, मन्दिर की सफाई बगैरा करवाई। फिर रात को 8.15 बजे सभा की गई। धर्म सम्बन्धियों के इलावा दो तीन जन और भी आकर शामिल हुए। सभा में देवात्मा के महान रूप के बारे में और उनकी शरण ग्रहण करने की परम आवश्यकता के बारे में ब्यान किया। बताया कि मनुष्य अपने अहंकार का कैदी है, उसे देवात्मा की कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती।

12 तारीख रविवार के दिन सुबह 8.30 बजे एक सभा की गई। बताया गया कि मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन अपना आप है। उसके भयानक नीच अनुराग हैं। एक-एक नीच अनुराग की लीला ब्यान की गई और बहुत जोरदार ब्यान किया गया कि किस प्रकार भगवान देवात्मा भयानक शत्रुओं से बचाते हैं। इस सच्चाई को पेश किया गया। कितने ही जन इस सभा से प्रभावित हुए। कुछ जनों को देवधर्म मिशन की पुस्तकें भी दी गई। मन्दिर की देख रेख के बारे सम्भव प्रयास किया।

सिरसा: – 2.30 बजे के करीब श्रीमान बलदेव सिंह जी और सुखदेव जी सिरसा पहुंचे। यहां बीबी रमेश जी और कान्ता जी के परिवारों को मिले। डॉ. बबल के पास भी गए। सब की सेहत का पता लिया और हितकर बातचीत हुई। भगवान की पैदा करता सत्संग से जुड़ने की जोरदार प्रेरणा दी।

मल्लेका: – 13 तारीख की रात को श्रीमान जी मल्लेका पहुंच गए। वहाँ पर रात को एक सभा की गई। इसमें 35-40 स्त्री पुरुष आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि किसी मकान, खेत, बस आदि में लगी आग स्थूल आखों से नज़र आ जाती हैं मगर इन्सानों को लगी आग इस प्रकार सहज से दिखाई नहीं देती। मनुष्यों को नीच सुख अनुरागों की आग लगी हुई है, जिसे केवल और केवल देवात्मा ही दिखाते हैं और वही अधिकारी जनों की आग उनकी योग्यता अनुसार बुझाते हैं। नशों, व्यभिचार, जुए, धन अनुराग और गुस्से की आग से जल रहे और राख बन रहे इन्सानों की जिन्दा मिसालें पेश की गई। देवात्मा ऐसे जनों को किस प्रकार बचाते हैं, उसके भी उदाहरण पेश किए गए। सत्संग में आने से सब हाजरीन के दरम्यान खुशी की लहर फैल रही थी। सब इसे अपना सौभाग्य महसूस कर रहे थे। इस सभा के बाद हरदेव सिंह जी की ओर से बेर बांटे गए।

14 तारीख की सुबह बावजूद बारिश व खराब मौसम के सभा की गई। इसमें केवल 15-20 जन ही आ पाए। सभा में "जीवन ज्योति के तुम सुरज" वाला भजन गाया गया। सभा में बताया गया कि क्या जीवन ज्योति कोई सचमुच देते हैं या यह केवल झूठ ही है। हाजरीन से एक-एक करके पूछा गया कि क्या तुम्हें कभी यह ज्योति मिली है। क्या हाजरीन के अपने अनुभव के ब्यान करने से और क्या श्रीमान जी के ठोस उदाहरण पेश करने से यह बात सिद्ध की गई कि सचमुच देवात्मा अद्वितीय रोशनी के सूर्य हैं और वह रोशनी से इन्सानी हृदयों को रोशन करके उनका

खराब, नीच, पापी व बेईमान चोर और दुष्ट रूप उज्ज्वल कर देते हैं और ऐसे रूप को बदलने के लिए तत्पर कर देते है। हाजरीन में से कुछ जनों ने अपने अनुभव की सच्ची साक्षी दी कि किस प्रकार देव ज्योति ने उन्हें अपने उपकारियों का और किसी अंश गुरु का रूप दिखाया है। यह सभा 11.00 बजे तक चली। प्रात: सारा समय बारिश चलती रही। हाजरीन जम कर सभा से लाभ उठाते रहे।

रात को फिर एक सभा की गई। इसमें 40 - 50 के करीब जन आकर शामिल हुए! इसमें बताया गया कि किस प्रकार मनुष्य अपनी परिस्थितियों या वातावरण के अनुसार परिवर्तित होता है। नीच संगत मनुष्य को बर्बाद कर देती है। भली शिक्षा और संगत इन्सान की रक्षा करती है। हृदयस्पर्शीय उदाहरणों सहित यह सत्य स्पष्ट किया गया। कुछ हाजरीन भी प्रभावित हुए। श्रीमान जीत सिंह जी ने इसी विषय में और हृदय स्पर्शीय घटनाएं सुनाई।

15 तारीख सुबह फिर एक सभा की गई। इसमें भी 35 - 40 जन आ गए। इसमें बताया गया कि धर्म क्या है और क्या नहीं है। अपने से निकलकर दूसरों के लिए हिलने से धर्म आरम्भ होता है। अपने स्वार्थ से उच्च भावों द्वारा ही निकला जा सकता है। उच्च भावों बिना कोई धर्म नहीं होता। इन बातों को हाजरीन पर नक्श करने की कोशिश की गई।

15 तारीख शाम को पति - पत्नी सम्बन्धी व्रत की सभा की गई। इसमें 70 - 80 जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि दाम्पत्य जीवन का लक्ष्य क्या है। परस्पर सेवा द्वारा एक दूसरे की रक्षा और विकास करना ही विवाहित जीवन का लक्ष्य है। इस अंग में भगवान की शिक्षा और कारज का ब्यान किया गया जिससे हाजरीन के दिल अच्छी तरह से प्रभावित होते रहे और पसीजते रहे। कितने ही हृदय गुरु महाराज के चरणों में झुकते रहे और अपने सौभाग्य को अनुभव करते रहे।

16 तारीख की सुबह की सभा यहाँ की आखरी सभा थी। इसमें भी 50 के करीब जन हाजिर हुए। इसमें भगवान का नीच जीवन मिटाने का, नारकीय सम्बन्धों में स्वर्गीय परिवर्तन लाने का अद्वितीय कारज बताया गया। यह सभा भी बहुत प्रभावशाली रही। बहुत से हाजरीन धन्य - धन्य महसूस करते दिखाई दिए। हाजरीन ने अपने आप एक हजार पचास रु० दान में दिए। हाजरीन में बेर बांटे गए। उसी दिन बाद दोपहर श्रीमान जी और सुखदेव जी पदमपुर के लिए रवाना हो गए।

पदमपुर: - 16 तारीख को यहां देवधर्म मिशन मन्दिर में पहली सभा रखी गई। इसमें 35 - 40 स्त्री पुरुष शमिल थे। 5 - 6 जन गजसिंह पुर से भी पधार गए थे। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य दु:खों से घिरा हुआ है और उनसे बचना चाहता है। मनुष्य ने दु:खों का कारण देवी देवतों की नाराज़गी और कोप में देखा है और वह देवी देवताओं का नाम जपकर उन्हें धयाकर उन दु:खों से बचना चाहता है। उपरोक्त दोनों बातें ही गलत हैं। न तो मनुष्य ने दु:खों का कारण ठीक सोचा है और न ही दु:खों का इलाज सही समझा है। मनुष्य के सारे दु:खों का कारण उसके मिथ्या विश्वासों और सुख लालसा में है। इसका सही ईलाज मिथ्या विश्वासों और सुख - लालसाओं से निवृत होकर ही हो सकता है।

17 तारीख सुबह की सभा की गई। इसमें 20 - 25 के करीब स्त्री पुरुष उपस्थित हुए। इसमें

बताया गया कि मनुष्य जीवन के तीन पक्ष हैं। शारीरिक, मानसिक और आत्मिक। इन तीनों के सन्तुलित विकास से ही अधिकारी जनों का उनकी योग्यता अनुसार जीवन सफल हो सकता है। इसमें आत्मिक ज्ञान और विकास मुख्य हैं। आत्मा के बारे में बताया गया कि आत्मा एक जिन्दा शक्ति है। इसको समझना और इसको बचाना मनुष्य का परम लक्ष्य है। अगले दिन सभा रखने का कह कर सभा बन्द की गई।

17 तारीख की रात को एक सभा की गई। इसमें 40 - 50 जन आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि मनुष्य समाज में दुःखों का कारण मनुष्य हृदयों में नीच सुख लालसाएं या नीच अनुराग और नीच घृणाएं हैं। मिथ्या विश्वास, मिथ्या संस्कार और मिथ्या अभ्यास आदि भी मनुष्य में घोर दुःखों के कारण हैं।

यह कारण दूर होंगे तो उसी मात्रा में दुःख भी दूर होंगे। इन्हीं कारणों को दूर करने के लिए जो आवश्यक वस्तुएं हैं वह हैं एक निराली रोशनी और एक अद्वितीय तेज। रोशनी हमारे अन्दर सुख लालसाओं का भयानक रूप दिखाती है। तेज और घृणा शक्ति हमें अधिकारी होने की अवस्था में एक - एक नीच अनुराग और नीच घृणा से मुक्त करती है। वह ज्योति पूजा - पाठ मन्दिर गुरूद्वारों से नहीं मिलती। वह ज्योति और तेज अधिकारी हृदयों को केवल देवात्मा ही दे सकते हैं। देवात्मा अधिकारी हृदयों को दुःखों से निकालते हैं और उचित सुख प्रदान करते हैं। गुरू महाराज के प्रभावों द्वारा बहुत सुन्दर वातावरण बना। इसमें कितने ही नए जनों ने आकर लाभ उठाया। 18 तारीख की सुबह फिर एक सभा की गई। इसमें 30 - 35 जन आकर शामिल हुए। इसमें मनुष्य आत्मा की गठन में नाना शक्तियों को समझाया गया। आत्मा सब रोगी हैं। और रोगी आत्मा सब विनाश को प्राप्त हो रही हैं। इस सूक्ष्म विनाश को देखने और उससे बचने की अतिशय ज़रूरत पर जोर दिया गया। इस सभा में भी कई अधिकारी हृदयों को प्रभावित होने का अवसर मिला।

रात को फिर एक सभा की गई। इसमें भी 40 - 50 स्त्री पुरूष आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य सुख अनुरागी हैं। मिथ्या और पाप परायण हैं। कोई ज्योति स्वरूप नहीं है, इसलिए आत्मिक रोगी हैं। मनुष्य को कोई पाठ - पूजा, जप आदि करके या अन्य धर्म साधन करके तसल्ली में नहीं रहना चाहिए। अपने आत्मिक रोगों का जिक्र करना चाहिए और उसके ईलाज के लिए संग्राम करना चाहिए। देवात्मा ही मनुष्य के रोगों को दिखाने के और उनसे मोक्ष देने में पूरे सक्षम हैं। उनसे जुड़कर समय रहते रहते लाभ उठाने की जरूरत है।

19 तारीख को सुबह एक सभा की गई। इसमें 35 - 40 जन आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि जिस तरह घड़ी को उसका सैल चलाता है, मोटर को उसका पट्रोल चलाता है, उसी तरह मनुष्य को उसके भाव चलाते हैं। अपने भले का ज्ञान पाना अति आवश्यक है। इस ज्ञान से शून्य रहकर मनुष्य महा हानियां व दुख उठाता है। यह ज्ञान मनुष्य अपने आप नहीं पा सकता। इसके लिए देवात्मा की ज्योति की जरूरत है। अपने भावों सम्बन्धी ज्ञान पाने की जोरदार प्रेरणा की गई। और उदाहरणों सहित बताया गया कि किस प्रकार एक - एक अधिकारी जन को देवात्मा की ज्योति में अपनी योग्यता के

अनुसार एक एक भावों का पता चलता है। ज्यों-ज्यों मनुष्य अपने भावों को जानता है, त्यों-त्यों वह अधिक सुरक्षित होता जाता है। अन्यथा बहुत असुरक्षित और दुःखी होता है। इस सभा से लोग बहुत प्रभावित हो रहे थे।

रात को फिर एक सभा की गई: – इसमें 40 के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि नेचर के दो रूप है:- स्थूल और सूक्ष्म। सूक्ष्म दुनिया में असरों के बारे में बताया व समझाया गया। फिर सब पदार्थ और सब व्यक्ति अपने भिन्न-भिन्न प्रकार के असर छोड़ते हैं और भिन्न-भिन्न प्रकार का प्रभाव डालते हैं। देवात्मा के अद्वितीय प्रभावों के बारे में समझाया गया। वह मनुष्यों के अन्दर किस प्रकार उच्च परिवर्तन लाने का अद्भुत कारज करते हैं। ठोस उदाहरणों द्वारा हाजरीन पर नक्श किया गया जिससे हाजरीन किसी हद तक प्रभावित हो रहे थे। इस सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी भी पहुंच गए थे।

20 तारीख की सुबह फिर एक सभा की गई। इसमें 30-35 जन आकर शामिल हुए। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने दो सुन्दर भजनों का गान किया। सभा में ब्यान किया गया कि मनुष्य नाना पक्षों में कैदी है। किस प्रकार वह अपने संस्कारों का, अपने-अपने विश्वासों का, अपने-अपने अभ्यासों का कैदी, दास और बन्दी है। इसे भली भांत हाजरीन पर नक्शे किया गया। यह भी बताया गया कि भगवान देवात्मा नए तत्व दर्शाते हैं। कितने तत्वों का वर्णन भी किया गया। उपरोक्त कैद की हानियों का वर्णन किया गया। सभा के बाद भी कुछ जनों ने बैठकर अपने अपने प्रश्नों का उत्तर समझने की कोशिश की।

20 मार्च रात की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें 45 के करीब स्त्री पुरुष शामिल हुए। उन्होंने आत्मा सम्बन्धी अन्धकार को समझाने की कोशिश की। जहां अधिक अन्धे बसते हों, वहां आखों वाले की बेकदरी होती है। इस तत्व को समझाया गया! हाजरीन के सम्मुख दिलचस्प ढ़ग से सच्चाई को पेश किया गया। 21 तारीख को सुबह की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें 30-35 जनों के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि श्रद्धा के बगैर मनुष्य बड़ी-बड़ी हस्तियों से न केवल लाभ नहीं उठाता बल्कि उनका बहुत निरादर भी करता है। देवात्मा हमारे युग में सर्व उच्च हस्ती प्रकट हुए हैं। उनको पहचानना मनुष्य का सबसे बड़ा सौभाग्य है। मगर श्रद्धा भाव के न होने से मनुष्य इस महा सौभाग्य से वंचित रहता है व कोई लाभ नहीं उठाता। इसी लिए देवात्मा पर गोलियां चली हैं, उन्हें जेल पहुंचाने की सिर तोड़ कोशिशें हुई हैं। यह बड़ी विड़म्बना है कि मनुष्य को उसके भाव चलाते हैं। मगर मनुष्य अपने परिचालिक भावों को न केवल जानता नहीं है बल्कि उन्हें जानने की इच्छा तक नहीं रखता। इसीलिए बहुत हानियां उठाता है। इसके पश्चात सभापति जी ने बताया कि दूसरों के उचित सुख बढ़ाने और उचित दुःख घटाने से ही धर्म आता है। निकटी सम्बन्धियों माता-पिता, बहन भाई, पति पत्नी के उचित दुःख घटाने व उच्च सुख बढ़ाने का व्याकुलता से ब्यान किया गया।

दोपहर 2.30 बजे एक लोकल परिवार में सभा की घोषणा के बाद यह सभा समाप्त हुई। 2.30 बजे दोपहर एक लोकल सत्संगी के आग्रह पर उनके घर में एक सभा रखी गई जो श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

ने करवाई। इसमें बताया गया कि हम सम्बन्धों से घिरे हुए हैं और हम भले-बुरे भी सम्बन्धों में ही बनते हैं। धर्म भी सम्बन्धों में है। सम्बन्धों के बनाने और बेहतर करने से धर्म आता है। सम्बन्धों में खराब होने से बुराई आती है। नाना सम्बन्धों में हितकर और उच्चभाव धारी बनने की प्रेरणा से पूर्ण बहुत ही सुन्दर ब्यान किया गया। गुरू महाराज ने जिस प्रकार सभापति के निज सम्बन्ध बेहतर किए उसकी उन्होंने भाव पूर्ण गाथा ब्यान की जिससे बहुत अच्छा वातावरण बना। सभा के बाद सब को अच्छा खान-पान करवाया गया।

रात को 8.30 बजे फिर सभा की गई। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। 50 के करीब स्त्री पुरुष आकर शामिल हुए। नीच रुचियों की दासता का ब्यान सभापति जी ने बड़े सुन्दर ढंग से किया। किस प्रकार भगवान देवात्मा अधिकारी मनुष्यों को इस दासता से मुक्त करते है। उसका हृदयस्पर्शीये ब्यान किया गया। 10.15 बजे तक यह सभा जारी रही।

22 तारीख की सुबह इस सत्संग की आखरी सभा की गई। इस सभा में 60 के करीब जन आकर शामिल हुए। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। पहले यह सच्चाई ब्यान की गई कि देवात्मा आध्यात्मिक दुनिया में नए सत्य और तत्व दिखाते हैं। कितनी नई सच्चाईयों के बताने के पश्चात सभापति जी ने बताया कि सम्बन्धों में नरक का कारण मनुष्य का कई पक्षों में अन्धापन है। मनुष्य दूसरों के गुण और उपकार व दुःख देखने में असमर्थ है और अपने दोष देखने के सम्बन्ध में भी अन्धा है। इसी कारण से सम्बन्धों में नरक है। बताया गया कि भगवान देवात्मा किस प्रकार यह अन्धापन दूर करते हैं और सम्बन्धों में स्वर्गीय लीला पैदा करते हैं। बहुत अच्छी संख्या में अधिकारी जन इस प्रभावशाली ब्यान से अच्छा लाभ उठाते रहे और अद्वितीय धर्म अवतार देवात्मा के श्री चरणों में कई अधिकारी जन झुकने का अवसर पाते रहे और धन्यवाद के भावों से भरते रहे। सभा के बाद 1420 रू अपने आप हाजरीन ने दान में दिए और हाजरीन को मीठी वस्तु खिलाकर विदा किया। कुछ जन कई किताबें भी ले गए। इस प्रकार सैकड़ों पदमपुर, गजसिंहपुर के निवासियों तक देवात्मा के निराले कारज की खुशखबरी पहुंची और कितने जनों को इस सत्संग के निकट होने का अवसर मिला। कुछ जनों ने जर्दा, माँस, शराब आदि से बचे रहने की प्रेरणा भी अनुभव की, कुछ मासिक पत्रिका भी नई जारी हुई। इस प्रकार यहाँ सप्ताह का निरन्तर संग्राम किसी अंश हितकर प्रमाणित हुआ। चार बार जय ध्वनि के साथ यह सभा सम्पन्न हुई।

(एक सेवक)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Post